कृषि एवं ग्रामीण श्रमिकों के लिये CPI

स्रोत: पी.आई.बी.

श्रम और रोज़गार मंत्रालय के **श्रम ब्यूरो** ने **कृषि श्रमिकों (CPI-AL)** और **ग्रामीण श्रमिकों (CPI-RL) के लिये अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक** जारी किया है।

- **CPI -AL और CPI-RL शृंखला** वर्तमान में **20 राज्यों और अखिल भारतीय स्तर पर मासिक रूप से संकलित** की जाती है।
- **जनवरी 2025 में मुद्रास्फीति दर क्रमशः 4.61% और 4.73%** दर्ज की गई, जो **उल्लेखनीय गिरावट** दर्शाती है, जो ग्रामीण भारत में आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं पर मूल्य दबाव में कमी का संकेत देती है।
- **CPI-AL:** यह **ग्रामीण कृषि श्रमिकों** के **जीवन -यापन की लागत** में परिवर्तन को मापता है और इसका उपयोग विभिन्न राज्यों में कृषि श्रमिकों के लिये **न्यूनतम मज़दूरी** को समायोजित करने के लिये किया जाता है।
    - CPI(AL) **CPI(RL) का एक उपसमूह** है।
- **CPI-RL:** यह **ग्रामीण श्रमिकों** के जीवन-यापन की लागत में परिवर्तन को मापता है।
    - CPI-AL और CPI-RL दोनों के लिये **आधार वर्ष 1986-87** है।
        - आधार वर्ष समय के साथ सांख्यिकीय परिवर्तनों की **तुलना करने** के लिये एक **संदर्भ बिंदु** है। उदाहरण के लिये, **GDP, मुद्रास्फीति** आदि।

//

मुद्रास्फीति और इससे संबंधित पद

मुद्रास्फीति

- वस्तुओं/सेवाओं की कीमतों में वृद्धि; क्रय शक्ति में तदनुसार गिरावट
  - रेंगती हुई मुद्रास्फीति (Creeping Inflation): हल्की/मध्यम मुद्रास्फीति जहाँ मूल्य स्तर, एक निश्चित अवधि में लगातार कम दर (एकल अंकीय मुद्रास्फीति दर) पर बढ़ता है।
  - कूदती हुई मुद्रास्फीति (Galloping Inflation): यह तब होती है जब निम्न मुद्रास्फीति को नियंत्रित नहीं किया जाता है (मुद्रास्फीति दोहरे/तिहरे अंकों में - 20/100/200% वार्षिक)
  - अति मुद्रास्फीति (Hyperinflation): कीमतें सालाना मिलियन या यहाँ तक कि एक ट्रिलियन प्रतिशत तक बढ़ जाती हैं (1920 के दशक में जर्मनी में देखी गई)

कोर मुद्रास्फीति

- वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में परिवर्तन लेकिन खाद्य/ऊर्जा क्षेत्रों को छोड़कर (कीमतों में अस्थिरता के कारण)

हेडलाइन मुद्रास्फीति

- टोकरी में सभी वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन (खाद्य और ऊर्जा सहित)

कोर = हेडलाइन - खाद्य एवं ईंधन सामग्री

स्टैगफ्लेशन

- जब मुद्रास्फीति, बेरोज़गारी और आर्थिक स्थिरता/मंदी एक साथ होती है; इस प्रकार की मुद्रास्फीति का प्रबंधन करना सबसे कठिन होता है
  - 1970 के दशक (अमेरिका, ब्रिटेन) में विकसित देशों द्वारा इस स्थिति का सामना किया गया जब विश्व में तेल की कीमतें नाटकीय रूप से बढ़ीं

अपस्फीति

- मुद्रास्फीति का प्रतिलोम - वस्तुओं/सेवाओं की कीमत में निरंतर गिरावट
  - यहाँ, वार्षिक मुद्रास्फीति दर 0% से नीचे गिर जाती है जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा के वास्तविक मूल्य में वृद्धि होती है (जापान को 1990 के दशक में लगभग एक दशक तक इसका सामना करना पड़ा)
  - यह मंदी/अवसाद में तब्दील हो सकता है, इसलिए यह मुद्रास्फीति से भी अधिक खतरनाक है

अवस्फीति

- जब मुद्रास्फीति की दर कम हो जाती है
  - इसका तात्पर्य यह है कि कीमतें प्रत्येक महीने के साथ धीमी गति से बढ़ रही हैं (मुद्रास्फीति हो रही है)

अपस्फीति कीमतों में गिरावट है, जबकि अवस्फीति मुद्रास्फीति दर में गिरावट है

मुद्रा संस्फीति

- आमतौर पर अपस्फीति का अनुसरण होता है
  - नीति निर्माता मुद्रास्फीति (अधिक सरकारी खर्च, कम ब्याज दरें आदि) उत्पन्न करके आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

स्क्यूफ्लेशन

- इस स्थिति में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की विषमता देखने को मिलती है; कुछ क्षेत्रों को भारी मुद्रास्फीति का सामना करना पड़ता है, जबकि कुछ कुछ क्षेत्रों में मुद्रास्फीति की अनुपस्थिति देखने को मिलती है और कुछ क्षेत्रों को अपस्फीति का भी सामना करना पड़ रहा है

ग्रीडफ्लेशन

- वह स्थिति जहाँ (कॉर्पोरेट) लालच मुद्रास्फीति को बढ़ावा देता है; कंपनियाँ लाभ को अधिकतम करने के लिए लागत से परे अपनी कीमतें बढ़ाती हैं

श्रिंकफ्लेशन

- यह छिपी हुई मुद्रास्फीति का एक रूप है। इससे अक्सर ग्राहकों को निराशा/असंतोष होता है
  - श्रिंकफ्लेशन किसी उत्पाद के स्टिकर मूल्य को बनाए रखते हुए उसके आकार को कम करने की पद्धति है।

दृष्टि The Vision | Drishti IAS

और पढ़ें: [औद्योगिक श्रमिकों के लिये उपभोक्ता मूल्य सूचकांक]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/cpi-for-agricultural-and-rural-labourers